Volume: 1 Issue: 2 Pages: 52-54
International Journal of Research in Academic World
E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 3.133
Received: 16/September/2021 Int. J Res. Acad. World. 2021; 1(2):52-54 Accepted: 21/October/2021

रायगढ़ घराने में कथक का नृत पक्ष

*[1]डॉ. जितेश गड़पायले

*[1]सहायक प्राध्यापक, कथक नृत्य विभाग, नृत्य संकाय, इं.क.सं.वि.वि. खैरागढ, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र श्रायगढ़ घराने में कथक का नृत पक्षश कथक नृत्य शैली के नृत्त पक्ष (ताल–लय प्रधान नर्तन) को अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों से उसे पृथक और विलक्षण सिद्ध करने वाला प्राण तत्व मानता है। नृत्त पक्ष कथक की लोकप्रियता का मुख्य कारक और कला का एक सृजनात्मक उपक्रम है।

कथक शैली में उठान, ठाट, आमद, तोड़ें, टुकड़े, परन, प्रिमलु व तत्कार जैसे सौन्दर्यपूर्ण अंग संचालन ताल विशेष में प्रदर्शित होते हैं, जहाँ तालपक्ष भावों को सूक्ष्मतर बनाता है। कथक उत्तर भारत की एकमात्र शास्त्रीय नृत्य शैली है, इसलिए स्थानों और पृष्ठभूमियों की विभिन्नता के कारण इसमें विभिन्न घरानों (जैसे जयपुर और लखनऊ) के रूप में पर्याप्त वैविध्य देखने को मिलता है।

रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह ने विभिन्न घरानों के गुरुओं को एकत्र कर कथक परम्परा का संरक्षण किया और एक नई शैली विकसित की। यही बाद में कथक के रायगढ़ घराने के रूप में प्रसिद्ध हुई। जयपुर घराने की विशेषता हिसाबी लय, क्लिष्ट बंदिशें, तेजी–तैयारी, और लय के चमत्कारपूर्ण प्रयोग हैं। वहीं, लखनऊ घराने में छोटी बंदिशों की खूबसूरती और ठाट, आमद के साथ विलम्बित लय पर नाच समाप्त करने का चलन है। नृत्त पक्ष के बोल, तोड़ व परन की पारंपरिक बंदिशें ही घराने का परिचय दे देती हैं।

मुख्य शब्दः शास्त्रीय नृत्य शैली में कथक की उपयोगिता और नृत्तांग उसका मुख्य तत्व। नृत्य शैलिय की विलक्षणता को सिद्ध करना, नृत्त पक्ष कथक का प्राण तत्व भी है।

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय कला जगत में जब भी कथक नृत्य शैली की चर्चा आती है तथा अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों के बरक्स कथक को रखकर देखते हैं तो पाते हैं कि नृतांग ही वह तत्व है जो अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों से उसे पृथक और विलक्षण सिद्ध करता है। सौन्दर्यपूर्ण अंग संचालन के माध्यम से किसी ताल विशेष में उठान, ठाट, आमद, तोड़ें, टुकड़े, परन, प्रिमलु व तत्कार आदि का प्रदर्शन किसी भी प्रस्तुति की खासियत होती है। उसमें भी तालपक्ष का बरताव कथक को भावों के स्तर पर सूक्ष्म से सूक्ष्मतर बनाता है।

1. **मन की परिभाषा यह है कि इससे अनुभूति, विचार और इच्छा के प्रक्रम होते हैं। मनोविज्ञान कहता है कि अवचेतन विचार और अचेतन इच्छाएँ भी होती हैं।**

कथक के इस पक्ष की लोकप्रियता का दिलचस्प प्रमाण यह है कि विभिन्न शास्त्रीय नृत्य शैलियों के शीर्षस्थ कलाकार अपने नृत्य में कथक के नृत पक्ष संबंधी सौन्दर्य उपकरण जैसे तत्कार, लयकारी आदि का समावेश दर्शकों को प्रभावित एवं चमत्कृत करने की दृष्टि से कर रहे हैं।

2. **आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार मानव मस्तिष्क विश्व की सर्वाधिक विलक्षण चीज़ है। इसमें तेरह अरब अणु हैं जो बाह्य जगत व शरीर से प्राप्त सम्वादो का अध्ययन करते हैं।**

कथक के नृत पक्ष के स्वरूप एवं उसके विशिष्टता यह नृत्य की अपनी कविता है, वैसे वागर्थ से मुक्त है। चूँकि बोलों आदि में शब्दों का नहीं केवल ध्वनियों आदि का प्रयोग होता है, यह भी कह सकते हैं कि नृत नृत्य का वागर्थ है''।

3. **वेदांत दर्शन में ब्रह्म को आनंदमय और उसकी अभिव्यक्ति के लिए आनंदमयी कहा गया है। पृथ्वी, अंतरिक्ष, भूलोक, समुद्र, अग्नि, सूर्य, सब उसी कला के अंश हैं।**

कला एक सृजनात्मक उपक्रम है। कलाकार अपनी

*Corresponding Author: डॉ. जितेश गड़पायले

व्यक्तिगत क्षमता, शिक्षा–दीक्षा, अभ्यास, कल्पना शक्ति, परिवेश एवं दर्शक समाज की अभिरुचि के अनुरूप अपने सृजन एवं कला संसार को रचता है। सम्पूर्ण उत्तर भारत की एकमात्र शास्त्रीय नृत्य शैली होने के कारण कथक का फलक व्यापक है और इसी कारण स्थानों, परिस्थितियों तथा कला पृष्ठभूमियों की विभिन्नता होने से एक ही नृत्य शैली में विभिन्न घरानों के रूप में पर्याप्त वैविध्य देखने को मिलता है।

4. पुराणों में कहा गया है कि इस विश्व की रचना छंदों की सृष्टि है । इसके मूल में एक विराट छंद, ताल, लय या मात्रा है। उसी छंद के सौन्दर्य तत्व के आवश्यक सामंजस्य व संतुलन की प्रत्येक वस्तु प्रमाण से सुनियत (निश्चित) है। प्रकृति अपनी जीवशक्ति के बल पर चेतन सौन्दर्य अनुभूति देती है।

1935 के लगभग जयपुर के राजा सवाई माधो सिंह के समय गोष्ठी में सभी घरानों के मुख्य कलाकार एकत्र हुए। इसी प्रकार का एक महत्वपूर्ण प्रयास रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह का मिलता है, जहाँ उन्होंने न केवल विभिन्न घरानों के गुरुओं को एकत्र किया अपितु उनसे शिष्यों को प्रशिक्षित करवा कर कथक परम्परा के संरक्षण एवं एक नई शैली विकसित करने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। जिसे बाद में कथक के रायगढ़ घराने के रूप में ख्याति मिली।

5. देवयोनि में प्रजापति ब्रह्मा को प्रथम कलाकार माना जाता है । उन्होंने पंच भौतिक पदार्थ से मानव की रचना की ।

कथक के प्राणतत्व नृत पक्ष के मूल रूप व विस्तार को जानने व समझने के लिए हमें विभिन्न घरानों के वैशिष्ट्य के आलोक में उसे देखना होगा।

6. मुख्यतः कथावाचन ही कथक की परम्परा रही तथा उसके प्रभाव के लिए संगीत व नृत्याभिनय का तत्व उसमें समावेश किया गया है।

ताल–लय प्रधान नर्तन को ही कथक की पारिभाषिक शब्दावली में नृतांग या नृत कहते हैं। 'पादाभ्यां तालमाचरेत' सूत्र के माध्यम से अभिनय दर्पण में नर्तक के पदाघात द्वारा ताल धारण करने का उल्लेख मिलता है। जयपुर घराने में अप्रचलित तो लखनऊ घराने में प्रचलित तालों का चलन प्रायः देखने को मिलता है।

7. विद्वानों ने ता थेई इन नृत्य वर्गों से बनी हुई छंद को संक्षेप में ततकार कहा है।

जयपुर घराने के लय–तालगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालते हुए प्रसिद्ध नृत्यांगना व गुरु श्रीमती रोहिणी भाटे ने लिखा है – ''जयपुर घराने की शिक्षा के अंतर्गत मुझे हमेशा हिसाबी लय का अनुभव हुआ है, जिसमें लय के दर्जा तथा ताल की हर मात्रा का सूक्ष्म विभाजन आदि अंगों का सहज प्रयोग होता रहता है। इसी कारण त्रिपल्ली, चौपल्लीनुमा लमछड़ परनें इधर स्थायी गति से नाची जाती हैं और उनकी मूल ताल गति के साथ चलने वाली लडन्त समझना और उसका रस लेना गुणीजनों का ही काम होता है।

8. कलाकार केवल पैरों के द्वारा लय के विभाजन और विविध प्रकार के चालों की गतिविन्यास को सम्पन्न करता है।

नृत्य प्रस्तुति में ताल की गति जैसे–जैसे बढ़ती है, तरह–तरह की तत्कार प्रस्तुत की जाती है जिसमें विविध जातियों का तथा गतियों का विकट प्रयोग, तैयारी तथा बोल की सफाई के साथ किया जाता है''।

लय–ताल के साथ घुँघरूओं का तालमेल के माध्यम से दर्शकों का ध्यान नृत्य की ओर आकर्षित करने के लिए थोड़ी देर तक लय–ताल से खिलवाड़ करते हुए उठान का प्रयोग भी मूल रूप से जयपुर घराने में ही होता था जिसका बाद में सभी के द्वारा अनुसरण किया जाने लगा।

9. प्रस्तुतीकरण के समय नर्तक एक ही स्थान पर खड़े होकर किसी विशिष्ट मुद्रा में लयबद्ध अंग संचालन करता है, उसे थाट कहा जाता है।

छोटे–छोटे मुखड़े, टुकड़े व तिहाईयों के साथ खड़े रहने की मुद्राएँ बदलते हुए, उपांग व प्रत्यंगों के लयबद्ध परिचालन करने के 4–5 व ठाट के अंदाज तो सभी घरानों में देखने को मिलते हैं लेकिन उनके अंदाज अलग–अलग हैं। लखनऊ घराने में जहाँ लालित्यपूर्ण ढंग से भ्रू, ग्रीवा, कलाई आदि का लयबद्ध संचालन के साथ कसक–मसक व कटाक्ष आदि का प्रयोग है, वहीं जयपुर घराने में ठाट के चल अचल रूप व उनके लिए विशेष प्रकार की बंदिशें देखने को मिलती हैं। दोनों पैरों को जमीन से बिना उठाए एक ओर से दूसरी ओर सिरपते हुए ठाट बरतना जयपुर की खासियत है, जिसका प्रयोग बनारस के कलाकार भी बहुतायत में करते हैं।

10. कथक नर्तक जब तूतकार के बोलों पर आधारित टुकड़े को नाचते हुए मंच पर प्रवेश करता है या मंच पर उसका आगमन होता है, तब उस प्रवेश या आगमन की क्रिया को आमद कहते हैं ।

निष्कर्ष

आमद के पहले परन या प्रिमलू जोड़कर नाचने का चलन जयपुर और लखनऊ दोनों घरानों में देखा जा सकता है। आमद के साथ घातक भुंगा व धातिर–धातिर ये दो परनें विशेष प्रसिद्ध हैं। घातक भुंगा लखनऊ तथा धातिर–धातिर जयपुर के आमद का अंग मानी जाती रही है। बोल, तोड़ व परन की पारंपरिक बंदिशें स्वयं में ही घराने का परिचय दे देती हैं। लखनऊ घराने में छोटी–छोटी बंदिशों को खूबसूरती के साथ प्रस्तुत किया जाता है , किन्तु जयपुर में बोल को पूरा पैर से काटते हैं। लखनऊ घराने में ठाट व आमद के साथ विलम्बित लय पर नाच समाप्त कर देते हैं और तोड़े, टुकड़े, परन की प्रस्तुति द्रुत लय में करते हैं जो कि बराबर की लय

होने से सुगम हो जाती है। जयपुर में टुकड़े–परनों की प्रस्तुति विलम्बित लय में ही होती है जो अपेक्षाकृत दुष्कर है। इसी कारण इनके बोलों का आकार भी बढ़ जाता है। क्लिष्ट बंदिशें, भ्रमरी के वैविध्यपूर्ण प्रयोग, तेजी–तैयारी, चमक–दमक, ओज–ऊर्जा, लय के चमत्कारपूर्ण प्रयोग जयपुर घराने की विशेषता है।

जिसमें पंडित कार्तिकराम एवं पंडित बिरजू महाराज, सितारा देवी, कुमुदिनी ताखिया, रोहिनी भाटे, पंडित दुर्गालाल, रोशन कुमारी, दमयन्ती जोशी, रानी करना, सुनयना हजारीलाल, पं. रामलाल आदि जिन्होंने समर्पण भाव से हमारी कला परम्परा और उसकी शास्त्रीयता को बचाए रखा। न केवल बचाए रखा वरन् जो सौन्दर्यपरक प्रयोग दृष्टि उन्होंने विकसित की है उसने कथक को कला जगत में विशेष प्रतिष्ठा दिलाई है। कथक में जिस तरह से व्यापक दृष्टिकोण के साथ प्रभावशाली कलात्मक पहल की जा रही है उसका श्रेय इन्हीं शीर्षस्थ गुरुओं को है। कथन को जीवंत बनाए रखने की दृष्टि से यह जरूरी भी है और उसकी भविष्यकालीन समृद्धि के लिए आवश्यक भी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. श्री देवेन्द्र कुमार वेदालकार अनुवादक, फ्रायड मनोविश्लेषण, पृ.क्र. 17।
2. स्वामी सत्यानंद सरस्वती, ध्यान तंत्र के आलोक में, पृ.क्र. 207।
3. वाचस्पति गैरोला, भारतीय नाट्य परम्परा व अभिनय दर्पण, पृ.क्र. 87।
4. वासुदेव शरण अग्रवाल, भारतीय कला, पृ.क्र. 03।
5. डॉ.सरोज भार्गव, सौन्दर्य एवं ललित कलाएँ, पृ.क्र. 58।
6. डॉ.शत्रुघन शुक्ल, ठुमरी की उत्पत्ति विकास व शैलियाँ, पृ.क्र. 32।
7. डॉ. पुरु दाधीच, कथक नृत्य शिक्षा भाग – 1, पृ.क्र. 70।
8. पं. तीरथ राम आजाद कथक दर्पण, पृ.क्र. 179।
9. डॉ. जयचन्द्र शर्मा, कथक नृत्तम्, पृ.क्र. 102।
10. गुरू विक्रम सिंह, नटवरी कथक नृत्य माला, पृ.क्र. 52।